संस्थान समाचार

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी) संस्था और उसके केंद्रों की समाचार पत्रिका

■ प्रकाशन : वर्ष : 11 ■ अंक : 76 ■ दिसम्बर 2025

हिंदी की निरंतर सेवा के लिए निदेशक को मिला पुरस्कार

केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी को बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन के 44 वें महाअधिवेशन में महामहिम राज्यपाल अरिफ़ मोहम्मद खान जी के करकमलों द्वारा हिंदी भाषा एवं साहित्य की उन्नति में मूल्यवान सेवाओं के लिए, सम्मेलन द्वारा दिनांक 20 दिसंबर 2026 को "आचार्य नलिन विलोचन शर्मा स्मृति सम्मान" देकर से सम्मानित किया गया है।

शब्दों पर टिका है भाषा का आस्तित्व

नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग द्वारा दिनांक 09.12.2025 से 26.12.2025 तक जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, डाइट, गंगटोक, सिक्किम के डी.एल.एड. पाठ्यक्रम के 45 प्रशिक्षणार्थियों हेतु हिंदी भाषा संवर्धनात्मक पाठ्यक्रम संचालित किया गया।

पाठ्यक्रम का उद्घा टन प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा की अध्यक्षता में सरस्वती प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन कर किया गया। उन्होंने अपने अध्यक्षीय उदबोधन में कहा कि "हिंदी भारत की, संस्कृति की, जनमन की, दर्शन की चिंतन की भाषा है। भाषा का पूरा अस्तित्व शब्दों पर खड़ा हुआ है। हमें दैनिक जीवन में उपयोग होने वाले शब्दों का संकलन करना चाहिए। जिससे हमारे शब्द भंडार में वृद्धि हो सके और हम अपनी भाषा को और अधिक परिमार्जित कर सकें।"

विशिष्ट अतिथि प्रो. विश्वाधार देशमुख (मराठवाड़ा विद्यापीठ,महाराष्ट्र) की गरिमामयी उपस्थिति रही। उन्होंने कहा कि, भारत घूमकर ही भारत की आत्मा से परिचित हुआ जा सकता है। भारत के खाने एवं गाने में भारत की विविधता में एकता झलकती है। भारत की संस्कृति सभ्यता,

समन्वय एवं संतुलन बनाने का कार्य करती है यही भारतीयता है। नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. सपना गुप्ता ने कहा कि "हिंदी दो राज्यों के मध्य संपर्क भाषा का कार्य कर रही है। यहाँ आकर प्रशिक्षणार्थी हिंदी के माहौल में हिंदी के नए शब्द सीखते हैं, उनको हिंदी भाषा को अपने संप्रेषण का सशक्त माध्यम बनाने की नितांत आवश्यकता है जिससे वे संपूर्ण भारत से स्वयं को जोड़ सकें"।

कार्यक्रम में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, डाइट, गंगटोक, सिक्किम से पधारीं व्याख्याता सुश्री रजीता गुरुंग एवं सुश्री यंगजॉम, संस्थान के पूर्वोत्तर शिक्षण सामग्री निर्माण विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. मीनाक्षी दुबे, अनुसंधान एवं भाषा विकास विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी, अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. जोगेंद्र सिंह मीणा एवं सहायक प्राध्यापक डॉ. पुरुषोत्तम पाटील की गरिमामयी उपस्थिति रही। दो प्रशिक्षणार्थियों द्वारा अभिमत अनुभव प्रेषित किया गया।

पाठ्यक्रम अवधि के दौरान प्रशिक्षणार्थियों के लिए प्रो. देशमुख, संस्थान के माननीय निदेशक तथा शैक्षिक समन्वयक प्रो. हरिशंकर द्वारा व्याख्यानों; प्रो. सपना गुप्ता, प्रो. मीनाक्षी दुबे, डॉ. शिखा माहेश्वरी तथा डॉ. अनामिका गुप्ता द्वारा कक्षाओं का आयोजन किया गया।

शेष पृष्ठ 7 पर

स्वयं को जानने में सहायक है भारतीय ज्ञान परंपरा : प्रो. देशमुख

दिनांक 09 दिसंबर 2025 को अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग द्वारा 'भारतीयता की परिकल्पना' विषय पर प्रो. विश्वाधार देशमुख (विभागाध्यक्ष यशवंत महाविद्यालय स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विद्यापीठ नांदेड महाराष्ट्र) के व्याख्यान का आयोजन किया गया।

प्रो. विश्वाधार देशमुख ने अपने वक्तव्य में कहा कि आप यहाँ है तो आप भारत से क्या ले जा सकते हैं। यह आपको विवेकपूर्ण चुनना है। अपनी बात समझाते हुए उन्होंने कहा कि पाश्चात्य शिक्षण परंपरा दुनिया को जानने में सहायक है किंतु भारत की शिक्षण परंपरा स्वयं को जानने में सहायक है इस प्रकार स्वयं का ज्ञान ही भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल है। उन्होंने कहा कि भारत की ज्ञान परंपरा केवल बौद्धिकता की नहीं भावानात्मकता की बात करती है जो आज के समय में बहुत आवश्यक है। सामान्य भारतीय व्यक्ति का चरित्र आध्यात्मिक है जिसमें स्वार्थ की बजाय परमार्थ परिलक्षित होता है उसी के चलते वह दूसरे की पीड़ा को देखकर दुख का अनुभव करता है यही सच्ची मानवता है। उन्होंने विद्यार्थियों को आवाह्न किया कि हिंदी सीखने के लिए भारत के चरित्र को समझने का प्रयास करना होगा। अंत में अपने प्रश्नकर्ता विद्यार्थी, ऑरहॉन, श्रृद्धांजलि, एलिसा, रोहन, अमीन आदि के प्रश्नों के उत्तर दिए।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. रेणु चौधरी, सहायक प्रोफेसर ने किया। इस कार्यक्रम में विभाग के सभी विद्यार्थी एवं शैक्षिक सदस्य उपस्थित रहे।

साहित्य के माध्यम से कौशल विकास विषय पर एफडीपी का आयोजन

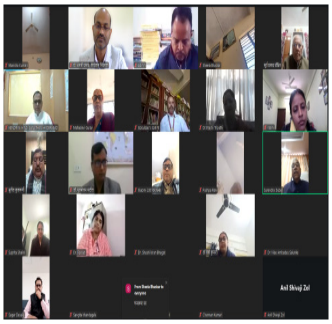

मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र (एमएमटीटीसी), केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा द्वारा 15-20 दिसंबर 2025 को 'साहित्य के माध्यम से कौशल विकास' विषय पर ऑनलाइन एक सप्ताह के संकाय संवर्धन कार्यक्रम (एफडीपी) का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों का उत्साह देखते ही बना। 150 से अधिक प्रतिभागियों द्वारा सहभागिता हेतु पंजीकरण किया गया, जिनमें से 140 प्रतिभागियों को अनुमति प्रदान की गई तथा लगभग 130 प्रतिभागियों ने सफलतापूर्वक सहभागिता की है। इस कार्यक्रम का उद्घाटन समारोह दिनांक 15 दिसंबर 2025 को सुबह 10:00 बजे से आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में स्वागत एवं परिचय मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र के कार्यक्रम निदेशक प्रो. धनजी प्रसाद ने दिया। उन्होंने कहा कि प्रतिभागियों की संख्या और उत्साह देखकर पता चलता है कि यह विषय कितना रुचिकर और प्रासंगिक है। औपचारिक स्वागत वक्तव्य केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने दिया। प्रो. कुळकर्णी ने अपने स्वागत वक्तव्य में मानव जीवन के विविध कौशलों का वर्गीकृत रूप से परिचय देते हुए प्रतिभागियों को इस कार्यक्रम की अवधारणा से परिचित कराया। उन्होंने प्रतिभागियों को आश्वस्त किया कि इस कार्यक्रम के पश्चात प्रतिभागी स्वयं अपने कौशलों में अभिवृद्धि महसूस कर सकेंगे एवं अर्जित ज्ञान को विद्यार्थियों तक प्रसारित करेंगे। अपने वक्तव्य में आपने विविध संत कवियों के उद्धरण भी प्रस्तुत किए। मुख्य अतिथि प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित ने कहा कि 80 करोड़ से अधिक बोलने वाले लोगों की संख्या वाली हिंदी भाषा में रोजगार की समस्या नहीं हो सकती। हमें अपनी भाषा को रोजगार और कौशल से जोड़ना अत्यंत आवश्यक है। बिना इसके हमारे सभी प्रयास अधूरे हैं। 1970 के दशक में केंद्रीय हिंदी संस्थान जैसी संस्थाओं ने प्रयोजनमूलक हिंदी की अवधारणा रखी थी। आज हम कौशलों की बात कर रहे हैं। यह अत्यंत आवश्यक और उपयोगी पक्ष है। यह कार्यक्रम इस दिशा में अपनी उपादेयता अवश्य सिद्ध करेगा। उद्घाटन कार्यक्रम के अध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के माननीय उपाध्यक्ष प्रो. सुरेंद्र दुबे ने संस्कृत रचनाकारों, राम चरित मानस और अन्य विविध उद्धरणों से साहित्य में छिपे हुए गूढ़तम जीवन कौशलों की ओर प्रतिभागियों का ध्यान आकृष्ट किया। उन्होंने कहा कि ऑनलाइन होने के कारण प्रतिभागी इस कार्यक्रम में सहभागिता को केवल औपचारिकता न करें, बल्कि वास्तविक रूप से मोबाइल/कंप्यूटर के सामने उपस्थित रहें और विद्वानों से ज्ञान ग्रहण करें। अंत में डॉ. मयंक कुमार त्रिपाठी, कार्यक्रम संयोजक ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

एक सप्ताह तक आयोजित इस कार्यक्रम में विविध कौशलों के विद्वान विशेषज्ञों द्वारा प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया गया। कार्यक्रम का समापन 20 दिसंबर को हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. (डॉ.) संजय द्विवेदी, विभागाध्यक्ष, जनसंचार विभाग, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल उपस्थित रहे। समापन कार्यक्रम की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने की।

विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में भाषण प्रतियोगिता

दिनांक 19.12.2025 को अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग द्वारा 'विश्व हिंदी दिवस' के उपलक्ष्य में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में वरिष्ठ वर्ग मे शिरवानी सुष्मिता बुद्धयी (दक्षिण अफ्रीका) ने प्रथम, फातिमा जमीमा इम्तियाज अहमद (श्रीलंका) ने द्वितीय ऑरहॉन खुरेलबातर (मंगोलिया) ने तृतीय स्थान तथा गंफा धम्म विजय थेरो (श्रीलंका) ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया वहीं कनिष्ठ वर्ग में श्रृद्धांजलि मोएल्क मिसर (सूरीनाम) प्रथम, जॉनीबेक जुमा बोएबिच सफारोव द्वितीय, समर एसाम अहमद एलसय्यद (मिस्र) तृतीय स्थान तथा ओटाबेक अमीरोव (उज्बेकिस्तान) ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

निर्णायक मंडल के रूप में नवीकरण एवं भाषा विकास विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. सपना गुप्ता जी तथा पूर्वोत्तर सामग्री निर्माण विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. मीनाक्षी दुबे जी उपस्थित रहीं।

57वें वार्षिक समारोह में संस्थान की सहभागिता

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग द्वारा मानस संगम, कानपुर द्वारा दिनांक 28 दिसंबर 2025 को आयोजित 57वें वार्षिक समारोह में सहभागिता की गई जो हिंदी भाषा, सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक चेतना एवं वैचारिक विमर्श को केंद्र में रखकर आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक संस्थानों, एवं स्वतंत्र साहित्य प्रेमियों और प्रतिनिधियों ने सहभागिता की।शैक्षणिक सत्र 2025–26 के अंतर्गत केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग द्वारा उक्त समारोह में संस्थान का प्रतिनिधित्व विदेशी विद्यार्थियों में सूरीनाम से सोनिया कबेंदा, चाड से रमादा तथा इमरान ताहिर, उज्बेकिस्तान से असेल और मखलियो अलीशेर, ताजिकिस्तान से इदरीसो, श्रीलंका से तक्षशिला, इंदुसुमन थेरो तथा सचिनी, और वियतनाम से क्विन ताबी ने किया।

परियोजना प्रारूपण हेतु बैठक का आयोजन

दिनांक 16.12.2025 से 18.12.2025 तक केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा में निदेशक महोदय प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी की अध्यक्षता में भाषा और साहित्य के माध्यम से विविध कौशलों के विकास परियोजना पर आधारित कार्य प्रारूप तैयार करने संबंधी एक बैठक हाइब्रिड माध्यम से आयोजित की गई। इस तीन दिवसीय बैठक में निदेशक महोदय, प्रो. नरेन्द्र मिश्र (नई दिल्ली), प्रो. दीपेंद्र जाडेजा (गुजरात) प्रो. गंगाधर वानोडे (नागपुर) प्रो. सुनील डहाळे (महाराष्ट्र), डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी (भुवनेश्वर), डॉ. श्रुति आनंद (प्रयागराज), डॉ. वंगीशा रोहिदास (महाराष्ट्र),संस्थान से डॉ. अंकुश औंधकर, कुलसचिव (अति. प्रभार), डॉ. पुरुषोत्तम पाटील, डॉ. प्रणीता मिश्रा, ने बैठक में भाग लिया। उक्त बैठक में परियोजना आधारित कार्य पर चर्चा-परिचर्चा कर प्रारंभिक प्रारूप तैयार किया गया जिसमें प्रमुख बिंदुओं के आधार पर पुस्तकों की संख्या, शीर्षक, और उनके अतर्गत विषयों को समाहित किया गया। यह बैठक डॉ. मीनाक्षी दुबे के सफल संयोजन में संपन्न की गई।

वित्त पोषित शोध परियोजना का आरंभ

अनुसंधान एवं भाषा विकास विभाग द्वारा संस्थान में आई.आई.टी. कानपुर द्वारा वित्त पोषित शोध परियोजना (Role of AI in Mental Health and Inclusion in Higher Academic Institutions) की शुरुआत हुई, जिसका संयोजक डॉ. अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी, विभागाध्यक्ष, अनुसंधान एवं भाषा विकास विभाग को नियुक्त किया गया है।

तीन पाठ्यक्रमों का शुभारंभ

अनुसंधान एवं भाषा विकास विभाग में तीन पाठ्यक्रमों 'पोस्ट एम.ए. अनुप्रयुक्त हिंदी भाषाविज्ञान डिप्लोमा', 'स्नातकोत्तर अनुवाद सिद्धांत एवं व्यवहार डिप्लोमा', एवं 'हिंदी पाठ-संपादन एवं अशुद्धि-शोधन डिप्लोमा' की कक्षाएँ शुरु हो रही है।

'भारतीयता एवं साहित्य' विषय पर विशेष व्याख्यान

केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग द्वारा जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान डाइट गंगटोक सिक्किम के प्रशिक्षणार्थियों के लिए 'भारतीयता एवं साहित्य' विषय पर एक व्याख्यान का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में प्रो. विश्वाधार देशमुख, विभागाध्यक्ष, यशवंत महाविद्यालय स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विद्यापीठ नांदेड (महाराष्ट्र), केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद से सेवानिवृत्त प्रो. गंगाधर वानोड़े एवं विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. सपना गुप्ता की गरिमामयी उपस्थिति रही। व्याख्यानदाता प्रो. विश्वाधार देशमुख ने कहा कि "भारतीय ज्ञान परंपरा में वक्ता महत्त्वपूर्ण नहीं होते, श्रोता महत्वपूर्ण होते हैं। भारतीय परंपरा वाद-संवाद की परंपरा है जो एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को सौंपती है। भारतीय साहित्य सिर्फ मनुष्य का सुख-दु:ख नहीं बल्कि भारतीय समाज का सर्वमुखी प्रतिबिंब है।" प्रो. गंगाधर वानोड़े ने कहा कि "सीखने के लिए धैर्य आवश्यक है। कौशल में सबसे महत्वपूर्ण श्रवण है। प्रो. सपना गुप्ता ने कहा कि शिक्षक रोल मॉडल होता है तथा व्यक्तित्व का विकास स्वयं को जानने से ही संभव है। व्यक्ति की पहचान व्यक्तित्व से ही बनती है अतः व्यक्तित्व में भारतीयता होना जरुरी है। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अनामिका गुप्ता ने किया एवं प्रेस रिपोर्टिंग डॉ. शिखा माहेश्वरी ने की।

रोजगारोन्मुख पाठ्यक्रम हेतु कार्यशाला आयोजित

अनुसंधान एवं भाषा विकास विभाग में विभागाध्यक्ष डॉ. अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी के द्वारा 'हिंदी पाठ-संपादन एवं अशुद्धि-शोधन डिप्लोमा' पाठ्यक्रम के संशोधन हेतु दिनांक 27-28 दिसंबर को कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में रोजगारोन्मुख पाठ्यक्रम बनाने पर जोर दिया गया ताकि छात्रों को विभिन्न मीडिया एवं प्रकाशन संस्थानों में रोजगार हेतु तैयार किया जा सके।इसमें बाह्य विद्वान के रूप में प्रो. अरुण कुमार भगत, डॉ. सूर्यनाथ सिंह, डॉ. अतुल कुमार मिश्र, डॉ. अंजनी कुमार राय, श्री अनुज शुक्ला शामिल थे।

आई.एल.ए. का 71 वाँ अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन होगा मुख्यालय में आयोजित

इंडियन लाइब्रेरी एसोसिएशन (ILA), केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के सहयोग से अपना 71वां वार्षिक सम्मेलन 2026 आयोजित करने जा रहा है। यह अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम दुनिया भर से लाइब्रेरियन, सूचना वैज्ञानिक, शिक्षक और प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों को एक साथ लाएगा। सम्मेलन का मुख्य विषय है 'AI युग में पुस्तकालय सेवाओं में बदलाव: पुस्तकालय सेवाएँ, उपयोगकर्ता जुड़ाव और सामुदायिक प्रभाव।' उपस्थित लोगों को संवाद को बढ़ावा देने, सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने और आधुनिक पुस्तकालयों के सामने आने वाली चुनौतियों और अवसरों के लिए नवीन समाधानों को प्रेरित करने के उद्देश्य से विभिन्न प्रकार की चर्चाओं में भाग लेने का अवसर मिलेगा। कार्यक्रम का लक्ष्य यह पता लगाना है कि पुस्तकालय डिजिटल युग के अनुकूल कैसे बन सकते हैं, साथ ही आवश्यक सामुदायिक केंद्र बने रहें। सम्मेलन में AI और मशीन लर्निंग को एकीकृत करने वाली नवीन पुस्तकालय सेवाओं से लेकर व्यक्तिगत अनुभवों और गेमिफिकेशन के माध्यम से उपयोगकर्ता जुड़ाव को बढ़ाने की रणनीतियों तक, विभिन्न विषयों को शामिल किया जाएगा। अन्य केंद्रित क्षेत्रों में समानता, सामाजिक समावेश को बढ़ावा देने, सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और स्थिरता को अपनाने में पुस्तकालयों की भूमिका शामिल है। प्रतिभागी 21वीं सदी के लाइब्रेरियन के लिए व्यावसायिक विकास और संकट के दौरान पुस्तकालयों की भूमिका पर भी चर्चा करेंगे।

संपादकीय

जादुई यथार्थ की विनम्र आवाज़....

प्रिय पाठकों,

वर्ष 2025 का अवसान हिंदी साहित्य के लिए केवल समय का मोड़ नहीं बना बल्कि उसी क्षण जादुई यथार्थवाद की वह शांत, करुण और गहन मानवीय आवाज़ भी मौन हो गई जिसने साधारण जीवन को असाधारण अर्थ देना सिखाया। 23 दिसंबर 2025 को विनोद कुमार शुक्ल का निधन केवल एक साहित्यकार का जाना नहीं था बल्कि उस सृजनशील दृष्टि का अवसान था जिसने जीवन को विशेष से सामान्य तथा लेखनी को सामान्य से विशेष की धारा प्रदान की। 1 जनवरी 1937 को छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव में जन्मे विनोद कुमार शुक्ल ने अपनी सहज, मितभाषी और जादुई यथार्थवाद से युक्त भाषा के माध्यम से हिंदी साहित्य को एक नई आंतरिक लय प्रदान की। कृषि विज्ञान जैसे व्यावहारिक विषय से शिक्षित होकर इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर में अध्यापन करते हुए भी वे जीवन की सूक्ष्म अनुभूतियों के कवि और कथाकार बने रहे।

विनोद कुमार शुक्ल का साहित्यिक अवदान अत्यंत व्यापक, बहुविध और कालखंडों में फैला हुआ है। उनके कविता-संग्रहों में लगभग जयहिंद (1971), वह आदमी चला गया नया गरम कोट पहिनकर विचार की तरह (1981), सब कुछ होना बचा रहेगा (1992), अतिरिक्त नहीं (2000), कविता से लंबी कविता (2001), आकाश धरती को खटखटाता है (2006), पचास कविताएँ (2011), कभी के बाद अभी (2012), कवि ने कहा (चुनी हुई कविताएँ, 2012) और प्रतिनिधि कविताएँ (2013) शामिल हैं जिनमें उनकी विशिष्ट अंतर्मुखी काव्य-दृष्टि स्पष्ट दिखाई देती है। उपन्यास विधा में उन्होंने नौकर की कमीज (1979), खिलेगा तो देखेंगे (1996), दीवार में एक खिड़की रहती थी (1997), हरी घास की छप्पर वाली झोपड़ी और बौना पहाड़ (2011), यासि रासात (2016) और एक चुप्पी जगह (2018) जैसी कृतियाँ रचीं, जो हिंदी उपन्यास को एक नई, शांत और जादुई यथार्थवादी दिशा देती हैं। कहानी-संग्रहों में पेड़ पर कमरा (1988), महाविद्यालय (1996), एक कहानी (2021) और घोड़ा और अन्य कहानियाँ (2021) उल्लेखनीय हैंवहीं कहानी और कविता पर केंद्रित पुस्तकों में गोदाम (2020) और गमले में जंगल (2021) प्रकाशित हुईं। उनकी रचनाओं का व्यापक स्तर पर अनुवाद हुआ -नौकर की कमीज़, दीवार में एक खिड़की रहती थी सहित अनेक उपन्यास और कहानी-संग्रह अंग्रेज़ी, फ्रेंच तथा प्रमुख भारतीय भाषाओं में आए- दि सरवेंट्स शर्ट, ए विंडो लिव इन ए वॉल वंस इट फ्लावर्स, मूनराइस फ्रॉम दि ग्रीन ग्रास रूफ़ और ब्लू इस लाइक ब्लू जैसे अंग्रेज़ी अनुवादों ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय पाठक दिए। उनकी कविताओं के संग्रह इतालवी, स्वीडिश, जर्मन, अरबी और अंग्रेज़ी में भी अनूदित हुएतथा 'पेड़ पर कमरा' का मराठी और अंग्रेज़ी अनुवाद प्रकाशित हुआ। अन्य कृतियों में 2020 में प्रकाशित बच्चों की कविताओं के पोस्टकार्ड भी शामिल हैं। उनकी रचनाओं पर दृश्य और रंगमंचीय कार्य भी हुए। नौकर की कमीज़ और कहानी बोझ पर मणि कौल द्वारा 1999 में निर्मित फिल्म को केरल अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में सम्मान मिला, आदमी की औरत और पेड़ पर कमरा पर अमित दत्ता द्वारा निर्देशित फिल्म को वेनिस अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह 2009 में 'स्पेशल मेंशन अवॉर्ड' प्राप्त हुआ वहीं दीवार में एक खिड़की रहती थी सहित अन्य कृतियों पर मोहन महर्षि जैसे नाट्य निर्देशकों ने सफल मंचन किए। विनोद कुमार शुक्ल के रचना-संसार कविता, कथा, उपन्यास, अनुवाद, सिनेमा और रंगमंच आदि सभी माध्यमों में अपनी शांत, गहरी और मानवीय उपस्थिति दर्ज कराई।

वर्ष 2024 में मिला 59वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार न केवल उनके सृजन की स्वीकृति था, बल्कि छत्तीसगढ़ के साहित्यिक परिदृश्य के लिए भी एक ऐतिहासिक उपलब्धि रही। इससे पूर्व साहित्य अकादमी पुरस्कार, पैन/नाबोकोव पुरस्कार और अनेक प्रतिष्ठित सम्मानों ने उनके योगदान को रेखांकित किया। विनोद कुमार शुक्ल की रचनात्मक विरासत हमें यह भी सिखाती है कि साहित्य किसी वैचारिक उद्घोष से नहीं, बल्कि जीवन के छोटे-छोटे क्षणों की सच्ची अनुभूति से जन्म लेता है। उन्होंने न तो बड़े कथानक रचे, न ही नाटकीय मोड़, फिर भी उनकी रचनाएँ लंबे समय तक स्मृति में ठहर जाती हैं। उनकी भाषा में एक ऐसी विनम्र दृढ़ता थीजो पाठक को भीतर की दुनिया से संवाद करने के लिए विवश करती है। आज जब साहित्य और संचार दोनों ही क्षेत्रों में तेजी, प्रदर्शन और सतही प्रभाव का दबाव बढ़ रहा हैतब विनोद कुमार शुक्ल का लेखन हमें ठहरकर देखने, सुनने और महसूस करने की प्रेरणा देता है। इस अर्थ में वे केवल अपने समय के लेखक नहीं थे, बल्कि भविष्य के पाठकों के लिए भी संवेदनशीलता, मानवीय करुणा और सृजनात्मक ईमानदारी का मार्गदर्शक प्रकाश बने रहेंगे।

उनका यह स्मरण हमें यह भी याद दिलाता है कि साहित्य का वास्तविक प्रयोजन मनुष्य को मनुष्य बनाए रखना हैऔर इस कसौटी पर विनोद कुमार शुक्ल का रचना-संसार एक स्थायी मूल्य की तरह हमारे साथ बना रहेगा। केंद्रीय हिंदी संस्थान उन्हीं के शब्दों को दोहराते हुए इस शब्द शिल्पी को श्रद्धा सुमन अर्पित करता है-

**"वह आदमी
चला गया नया गरम कोट पहिनकर
विचार की तरह"**

निदेशक
प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी 'देशगव्हाणकर'

492वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम

केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा महाराष्ट्र राज्य के गोंदिया जिले के हिंदी अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए दिनांक 08.12.2025 से 20.12.2025 तक 492वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। जिसका उद्‌घाटन समारोह दि. 08.12.2025 को संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में कुल 14 (महिला-02, पुरुष-12) प्रतिभागियों ने कक्षा में उपस्थित होकर प्रशिक्षण प्राप्त किया। यह कार्यक्रम केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में हैदराबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. विष्णु सरवदे उपस्थित थे। इस कार्यक्रम के संयोजक रूप में हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. फत्ताराम नायक, डॉ. दीपेश व्यास, अतिथि प्रवक्ता एवं डॉ. एस. राधा उपस्थित थीं। अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने कहा कि इस प्रशिक्षण से शिक्षकों का कौशल विकास होगा। आधुनिक संसाधनों के प्रयोग तथा हिंदी के व्यवहारिक एवं व्यवसायिक पक्ष को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने की विधियाँ सिखाई जाएँगी। उन्होंने आशा व्यक्त की कि अर्जित ज्ञान से शिक्षक विद्यार्थियों के ज्ञानवर्धन के साथ हिंदी की सेवा करेंगे।

मुख्य अतिथि प्रो. विष्णु सरवदे ने कहा कि तकनीकी युग में हिंदी को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। हिंदी भाषा सरल है, पर उसकी लिपि अपेक्षाकृत कठिन है। भारत भाषाई विविधताओं का देश है, जबकि अन्य देशों में शिक्षा राष्ट्रीय भाषा में होती है। वैश्विक स्तर पर भारत के बड़े बाजार के रूप में उभरने से विदेशी कंपनियाँ और सॉफ्टवेयर हिंदी में कार्य करने लगे हैं, जिससे हिंदी का विस्तार हो रहा है। पाठ्यक्रम संयोजक एवं क्षेत्रीय निदेशक डॉ. फत्ताराम नायक ने कहा कि आपको प्रशिक्षण के दौरान जो भी सिखाया जाएगा वह आपके जीवनपर्यंत शिक्षण कार्य में सहायक होगा। इस पाठ्यक्रम का समापन समारोह दिनांक 20.12.2025 को आयोजित किया गया। इस पाठ्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों ने हस्तलिखित पत्रिका “वैभवशाली गोंदिया जिला” की रचना की। इस अवसर पर प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। पर-परीक्षण के आधार पर उत्तम अंक प्राप्त छात्रों को विशेष पुरस्कार दिए गए। जिसमें निखिलेश शिवनाथ सिंह यादव को प्रथम पुरस्कार, रमेश किशनलाल गौतम को द्वितीय पुरस्कार तथा अनिलकुमार कन्हैयालाल माखिजा को तृतीय पुरस्कार प्रदान किए गए।

‘भारतीय भाषा’ दिवस आयोजित

केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र द्वारा दिनांक 11.12.2025 को ‘भारतीय भाषा’ दिवस मनाया गया। इसमें आभासी मंच के माध्यम से मुख्य अतिथि के रूप पूर्व क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे, क्षेत्रीय निदेशक डॉ. फत्ताराम नायक, विशिष्ट अतिथि डॉ. सी.पी. सिंह, डॉ. दीपेश व्यास, डॉ. एस. राधा, शेख मस्तान वली, सजग तिवारी, के. इंद्रा एवं संदीप कुमार तथा महाराष्ट्र राज्य के गोंदिया जिले के 492वें नवीकरण पाठ्यक्रम के प्रतिभागी अध्यापक आदि उपस्थित थे।

इस अवसर पर आभासी मंच से प्रो. गंगाधर वानोडे ने कहा कि अधिक भाषाओं का सीखना ज्ञान में वृद्धि करता है।

लघु बजटीय राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न

दिनांक 26 एवं 27 दिसंबर, 2025 को शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार के केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा तथा शिक्षण महर्षि ज्ञानदेव मोहेकर महाविद्यालय, कळंब, जिला-धाराशिव, महाराष्ट्र के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी ‘हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना’ विषय पर आयोजित की गई।

इस अवसर पर इस संगोष्ठी में सह-संयोजक के रूप में केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. फत्ताराम नायक एवं सहयोगी रूप में शेख मस्तान वली, उपस्थित रहे।

क्रिसमस दिवस समारोह का आयोजन

दिनांक 19/12/2026 को क्रिसमस दिवस के अवसर पर अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों हेतु क्रिसमस दिवस के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस आयोजन में विदेशी विद्यार्थियों सहित केंद्र के शैक्षिक एवं प्रशासनिक वर्ग के सभी सदस्य उपस्थित रहे।

अर्द्ध-वार्षिक परीक्षाएँ संपन्न

दिनांक 12/12/2025 से 19/12/2025 तक केंद्र पर अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण पाठ्यक्रम की अर्द्ध-वार्षिक परीक्षाएँ संपन्न हुई, जिसमें सभी विद्यार्थियों ने भाग लिया।

मैसूर केंद्र

चतुर्थ हिंदी भाषा संचेतना शिविर

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के मैसूर केंद्र द्वारा दिनांक 09.12.2025 से 20.12.2025 तक कर्नाटक राज्य के उडुपी जिले के महात्मा गांधी मेमोरियल ईवनिंग कॉलेज के स्नातक स्तरीय विद्यार्थियों के लिए चतुर्थ हिंदी भाषा संचेतना शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर का उद्घाटन दिनांक 09.12.2025 को आयोजित किया गया। जिसकी अध्यक्षता संस्थान के माननीय निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी द्वारा की गई।

निदेशक महोदय आभासीय माध्यम से कार्यक्रम के प्रतिभागियों को संबोधित किया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि अपनी मातृभाषा के साथ-साथ एक अन्य भाषा सीखना गौरव की बात है। यह शिविर प्रतिभागियों को राज्य से ऊपर उठकर राष्ट्रीय भावना को ग्रहण करने में सक्षम बनाएगा। साथ ही यह प्रशिक्षण भाषा कौशल को बढ़ाने के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।" सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. के श्रीधर रहे उन्होंने उडुपी में पहली बार हिंदी से संबंधित कार्यक्रम आयोजित होने पर केंद्रीय हिंदी संस्थान एवं मैसूर केंद्र को आभार प्रकट किया।

सत्र के विशिष्ट अतिथि डॉ. देवीदास एस. नायक प्रधानाचार्य एम. जी. एम. इवनिंग कॉलेज ने कार्यक्रम को लेकर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि यह हमारे कॉलेज और कॉलेज के विद्यार्थियों के लिए हिंदी सीखने और समझने के लिए सुनहरा अवसर है।

शिविर का संयोजन मैसूर केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक, डॉ. रणजीत भारती ने किया। उन्होंने शिविर के उद्देश्य, पाठ्यक्रम एवं उसके उपयोगिता के बारे में विद्यार्थियों को परिचय कराया। इस शिविर के लिए कुल 58 (महिला-40, पुरुष-18) विद्यार्थियों ने पंजीकरण कराया। कार्यक्रम का संचालन कॉलेज की अध्यापिका कृतिका शेनॉय ने किया। सत्र के दौरान एम. जी. एम. कॉलेज की प्रधानाचार्या, प्रो. विनिता मैया, उप-प्रधानाचार्य, डॉ. एम. विश्वनाथ पाइ, बाह्य आमंत्रित शिक्षिका, डॉ. भैरवी आर. पाड्या एवं मैसूर केंद्र के लिपिक श्री एन. के. राघवेंद्र मौजूद थे।

कार्यक्रम के दौरान दो वाह्य अतिथि शिक्षक डॉ. भैरवी आर. पाड्या एवं डॉ. आनंद रायम ने प्रतिनियुक्त हुए थे। जिन्होंने ने अध्यापन कार्य किया। इसके अलावा दो विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। पहला विशिष्ट व्याख्यान प्रो. श्रीधर हेगड़े द्वारा 'देवनागरी लिपि की विशेषताएँ' विषय पर तथा दूसरा दिनांक 16.12.2025 को डॉ. एस. ए. मंजुनाथ द्वारा 'भारतीय धर्म' विषय पर दिया गया। शिविर के अंतर्गत प्रतिभागी छात्रों का दिनांक 09.12.2025 को पूर्व परीक्षण लिया गया एवं दिनांक 19.12.2025 को पर परीक्षण लिया गया। पर-परीक्षण के अंतर्गत प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। इसके अलावा शिविर के दौरान प्रतिभागियों के लिए भाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। शिविर का समापन सत्र दिनांक 20.12.2025 को आयोजित किया गया। जिसकी अध्यक्षता संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी द्वारा की गई। सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. देवीदास एस. नायक प्रधानाचार्य एम. जी. एम. इवनिंग कॉलेज रहे। धन्यवाद ज्ञापन मैसूर केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक, डॉ. रणजीत भारती ने किया।

गुवाहाटी केंद्र

गुवाहाटी केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में कार्यशाला आयोजित

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली एवं काजी नजरूल इस्लाम महाविद्यालय, चुरुलिया, पश्चिम बंगाल के संयुक्त तत्वावधान में काजी नजरूल इसलाम महाविद्यालय, चुरुलिया, आसनसोल, पश्चिम बर्द्धमान में दिनांक 15.12.2025 से 22.12.2025 तक आयोजित हिंदीतर भाषी हिंदी नवलेखक शिविर में केंद्रीय हिंदी संस्थान, गुवाहाटी केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. चंद्रशेखर चौबे ने स्रोत विद्वान/विशेषज्ञ के रूप में सहभागिता की।

इस नवलेखक शिविर में महाराष्ट्र, अरूणाचल प्रदेश, असम एवं पश्चिम बंगाल राज्य के लगभग कुल 40 प्रतिभागी सम्मिलित हुए। इस हिंदीतर भाषी हिंदी नवलेखक शिविर का उदघाटन दिनांक 15.12.2025 को काजी नजरुल इस्लाम महाविद्यालय, चुरुलिया, आसनसोल के सभागार में किया गया।

इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. मतिलाल सेन ने मंच पर

आसीन स्रोत विद्वान प्रो. अरूण कुमार पांडेय, डॉ. चंद्रशेखर चौबे, डॉ. कल्पना पंत एंव निदेशालय के सहायक निदेशक श्री नथुलाल जी का स्वागत किया।

शिविर के समन्वयक डॉ. सुनील कुमार शॉ ने स्वागत वक्तव्य देते हुए शिविर के आयोजन की उदेश्य व्याख्या की एवं प्रतिभागियों का स्वागत एवं निदेशालय के प्रति आभार व्यक्त किया।

इस शिविर में डॉ. चंद्रशेखर चौबे ने 15.12.2025 से 19.12.2025 तक पाँच दिनों में विभिन्न विषयों, यथा- पूर्वोत्तर की भाषाएँ एवं संस्कृति, हिंदीतर क्षेत्र एवं हिंदी रचनाकार, स्वाधीनता आंदोलन एवं बंगाल की हिंदी पत्रकारिता, हिंदी नाटक : आरंभ एवं विकास, हिंदी एकांकी आरंभ एवं विकास तथा हिंदी में बाल साहित्य लेखन पर व्याख्यान दिया, साथ ही शिविर के प्रतिभागियों को हिंदी की विभिन्न विधाओं में लेखन कार्य हेतु मार्गदर्शन किया।

हिंदी के प्रचार-प्रसार में संलग्न संस्थान की आठ पत्रिकाएँ

पत्रिकाएँ हिंदी के विकास की आधारशिला रही हैं। उन्होंने न केवल भाषा और साहित्य को समृद्ध किया बल्कि हिंदी को जनभाषा, विचारभाषा और सांस्कृतिक पहचान के रूप में भी सुदृढ़ किया। केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा प्रकाशित 8 पत्रिकाओं का राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार में अद्वितीय योगदान रहा है। संस्थान की पत्रिकाओं में अनुप्रयुक्त हिंदी भाषाविज्ञान, भाषाशिक्षण, शिक्षण प्रविधि और साहित्य चिंतन से संबंधित अधिकारी विद्वानों एवं शोधार्थियों द्वारा लिखे गए शोधपत्र, चिंतनपरक आलेख, पुस्तक समीक्षाएँ और हिंदी अकादमिक जगत की गतिविधियों से संबंधित महत्वपूर्ण समाचार आदि समाहित रहते हैं। समय-समय पर हिंदी भाषा ,साहित्य, भाषाविज्ञान, भाषाशिक्षण आदि क्षेत्रों से जुड़े प्रासंगिक विषयों तथा अनेक प्रतिष्ठित साहित्यकारों तथा भाषाविदों पर केंद्रित विशेषांक भी प्रकाशित होते हैं। इन पत्रिकाओं में अधिकांश यूजीसी केयर सूची में शामिल हैं। सुधी पाठकों के समक्ष संस्थान पत्रिकाओं का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

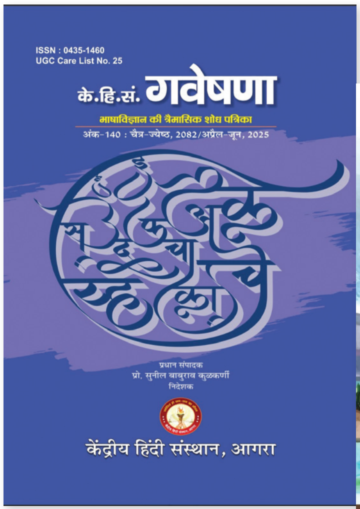

'गवेषणा' केंद्रीय हिंदी संस्थान की सबसे पुरानी त्रैमासिक शोध पत्रिका है। इस पत्रिका का प्रकाशन संस्थान द्वारा 1962-63 के दौरान आरंभ किया गया था। पहला अंक जनवरी 1963 में प्रकाशित हुआ। आरंभ में यह पत्रिका अर्धवार्षिक रूप में प्रकाशित होती थी। बाद में इसकी प्रकाशन अवधि त्रैमासिक कर दी गई। यह पत्रिका यूजीसी-केअर सूची में सम्मिलित है।

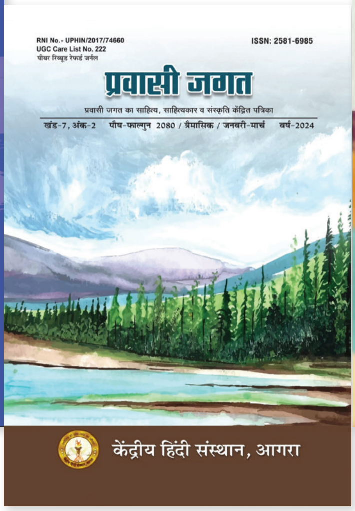

प्रवासी जगत पत्रिका हिंदी के प्रवासी साहित्य, साहित्यकारों एवं संस्कृति पर केंद्रित है। इसका प्रकाशन संस्थान मुख्यालय के अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग द्वारा त्रैमासिक रूप में किया जाता है। प्रवासी जगत पत्रिका विदेशों में हिंदी भाषा, साहित्य और संस्कृति के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से अपना महत्व सिद्ध कर रही है। देश-विदेश के हिंदी साहित्यकारों और हिंदी-प्रेमी पाठकों का सद्भाव इसके साथ जुड़ा है। यह पत्रिका यूजीसी-केअर सूची में सम्मिलित है।

'संवाद पथ' केंद्रीय हिंदी संस्थान दिल्ली केंद्र द्वारा प्रकाशित हिंदी जनसंचार एवं पत्रकारिता विषय-केंद्रित पत्रिका है। पत्रिका में इस व्यापक विषय क्षेत्र से संबंधित विभिन्न विषयों-उपविषयों पर केंद्रित शोधपरक आलेख प्रकाशित किए जाते हैं। पूर्व में यह पत्रिका 'मीडिया' नाम से प्रकाशित होती थी। यह पत्रिका यूजीसी केयर सूची में सम्मिलित है।

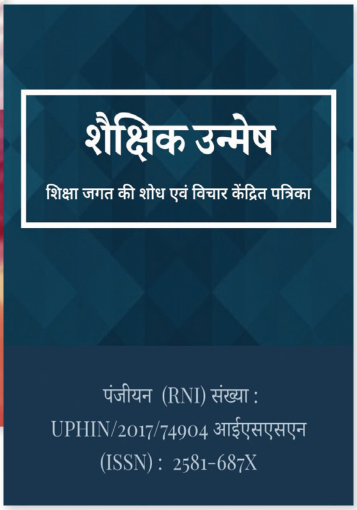

विगत साढ़े पांच दशक से अधिक समय से केंद्रीय हिंदी संस्थान हिंदीतर और विदेशी छात्रों के हिंदी शिक्षण के कार्य में संलग्न है। शिक्षा जगत की स्थितियों, समस्याओ तथा विकास की दिशाओ पर गंभीर चर्चा को ध्यान रखते हुए शैक्षिक उन्मेष पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है। इस पत्रिका का अभिप्राय ही है शिक्षा के क्षेत्र में नये ज्ञान का प्रस्फुटन, नई दृष्टि, नई तकनीक का प्रकटीकरण, शिक्षा की नई-नई विधियो की खोज और उन पर बहस को आमंत्रित करना। शिक्षा के सभी अंगो का उन्मेष, उन्नयन और देशानुकूल बनाने का उद्योग।

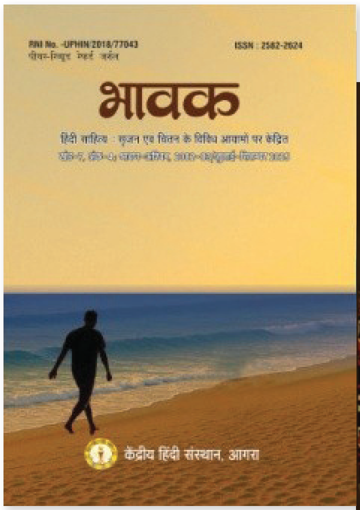

केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं की श्रंखला में भावक नवीनतम है। यह पत्रिका हिंदी साहित्य सृजन एवं चिंतन के विविध आयामों पर केंद्रित है। पत्रिका में इसकी निर्धारित विषयवस्तु के अनुरूप शोधपत्र एवं चिंतनपरक आलेख प्रकाशित किए जाएँगे। ये आलेख हिंदी साहित्य और तुलनात्मक भारतीय भाषा-साहित्य एवं आनुषंगिक विषयों पर आधारित होंगे।

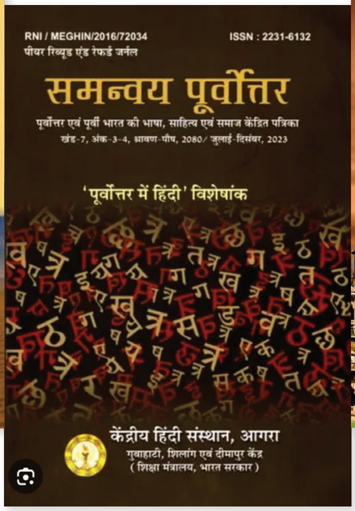

समन्वय पूर्वोत्तर पूर्वोत्तर भारत में हिंदी और स्थानीय भाषा, साहित्य, संस्कृति से जुड़ी परंपराओं एवं अकादमिक विमर्शों पर केंद्रित के.हिं.सं. के पूर्वोत्तर क्षेत्रीय केंद्रों की संयुक्त पत्रिका है। इसका प्रकाशन संस्थान के शिलांग केंद्र द्वारा त्रैमासिक आधार पर किया जाता है।

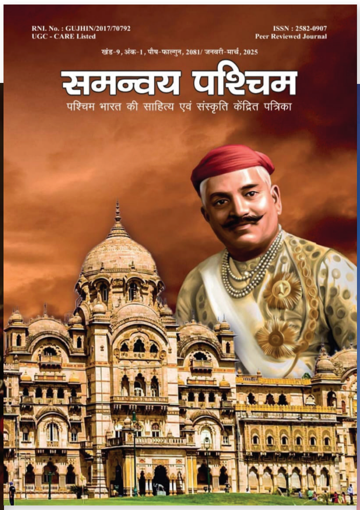

समन्वय पश्चिम भारत की भाषा-साहित्य-संस्कृति से जुड़ी परंपराओं एवं शैक्षिक विमर्ष का झरोखा है। यूजीसी केयर सूची में सम्मिलित केंद्रीय हिंदी संस्थान अहमदाबाद केंद्र द्वारा प्रकाशित शोध पत्रिका है जो प्रमुख रूप से भारत के पश्चिमी राज्यों में हिंदी का प्रतिनिधित्व करती है।

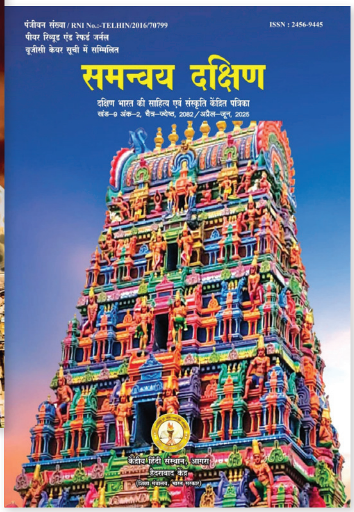

दक्षिण भारत की साहित्य एवं संस्कृति केंद्रित पत्रिका। संस्थान के हैदराबाद एव मैसूर केंद्र का संयुक्त प्रकाशन। 'समन्वय दक्षिण' में दक्षिण भारत (तेलंगाना, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, पांडिचेरी, अंदमान तथा निकोबार) के साहित्य, कला, भाषा, संस्कृति, समाज, शिक्षा, इतिहास, पर्यटन, ऐतिहासिक धरोहर आदि तथा साहित्यकारों की रचनाओं पर समीक्षात्मक अप्रकाशित शोधपरक आलेख, प्रसिद्ध रचनाकारों के साक्षात्कार आदि प्रकाशित किए जाते हैं।

राजकीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान डाइट गंगटोक सिक्किम के डी.एल.एड. के प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी।

प्रतिभागियों ने भेंट की हस्तलिखित पत्रिका 'वैभवशाली गोंदिया जिला'।

क्रिसमस दिवस के अवसर पर विदेशी विद्यार्थियों द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

हिंदीतर भाषी हिंदी नवलेखन शिविर का समूह चित्र।

नवीकरण पाठ्यक्रम में प्रमाण पत्रों का वितरण करते हुए प्रो. हरिशंकर।

सिक्किम के प्रशिक्षणार्थियों के लिए व्याख्यान का आयोजन।

आई.एल.ए. का 71 वाँ अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन होगा मुख्यालय में आयोजित।

पृष्ठ 1 का शेष

साथ ही, अवकाश दिवसों में आगरा, मथुरा तथा वृंदावन के ऐतिहासिक स्थलों के संदर्शन कराया गया।

पाठ्यक्रम का समापन समारोह दिनांक 26.12.2025 को प्रो. हरिशंकर (निदेशक प्रभार, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा) की अध्यक्षता में किया गया।

उन्होंने गंगटोक, सिक्किम से आए प्रशिक्षणार्थियों को अधिक मेहनत करने एवं आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। गंगटोक, सिक्किम से पधारी व्याख्याता सुश्री यंगजॉम ने अध्यापकों द्वारा दिए गए प्रशिक्षण की सराहना की एवं आभार व्यक्त किया। प्रशिक्षणार्थियों ने नेपाली, लेप्चा, भूटिया नृत्य एवं गीत प्रस्तुत किए।

नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग की विभागाध्यक्ष एवं पाठ्यक्रम संयोजक प्रो. सपना गुप्ता ने अपने उदबोधन में कहा कि, "इन प्रशिक्षणार्थियों में भावी शिक्षकों के गुण परिलक्षित होते हैं। इन प्रशिक्षणार्थियों के हिंदी सीखने में ही हिंदी के उज्जवल भविष्य की कामना के बीज अंतर्निहित हैं।"

अंत में, भविष्य की सुखद कामना करते हुए एवं आशीर्वचन देते हुए प्रतिवेदन भी प्रस्तुत किया तथा परीक्षा में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रशिक्षणार्थियों को पुरस्कृत किया। कार्यक्रम में पूर्वोत्तर शिक्षण सामग्री निर्माण विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. मीनाक्षी दुबे और अनुसंधान एवं भाषा विकास विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी की गरिमामयी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. शिखा माहेश्वरी, असिस्टेंट प्रोफेसर, नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग द्वारा किया गया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान द्वारा किया गया।

शब्दवार्ता

"सुशासन"

लोकतंत्र की सार्थकता केवल सत्ता परिवर्तन में नहीं, बल्कि सुशासन की निरंतरता में निहित होती है। 'सु' अर्थात् श्रेष्ठ और 'शासन' अर्थात् व्यवस्था। यह शब्द ऐसे प्रशासन का संकेत देता है जो जनहित, पारदर्शिता और जवाबदेही पर आधारित हो। सुशासन का अर्थ केवल नीतियाँ बनाना नहीं, बल्कि उनका प्रभावी और निष्पक्ष क्रियान्वयन सुनिश्चित करना है। डिजिटल तकनीक और ई-गवर्नेंस ने सुशासन को आज एक व्यावहारिक और मापनीय अवधारणा बना दिया है। अंततः सुशासन वही है जिसे जनता महसूस करे, केवल सुने नहीं। इसी भावना को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से भारत में प्रतिवर्ष 25 दिसंबर को 'सुशासन दिवस' मनाया जाता है। भारतीय मनीषा में श्रीमद्भगवद्गीता, अर्थशास्त्र और रामचरितमानस आदि में उल्लिखित सुशासन की संकल्पना दृष्टव्य है। सुशासन के परिणाम स्वरूप रामराज्य में व्याप्त समरसता का श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदास इस प्रकार वर्णन करते हैं-

'बिधु महि पूर मयूखन्हि, रबि तप जेतनेहि काज।
माँगे बारिद देहिं जल, रामचंद्र कें राज।।'

प्रस्तुति : शिवानी चौहान

प्रकाशन विभाग

संस्थान प्रकाशनों की बिक्री से संबंधित भुगतान को ऑनलाइन स्वीकार करने की सुविधा उपलब्ध है इसके लिए पृथक से खाता खोला गया है। क्यू आर कोड के माध्यम से भी भुगतान किया जा सकता है। खाता विवरण इस प्रकार है-

Account Holder's Name:
THE KENDRIYA
HINDI SHIKSHANA MANDAL AGRA
Account Number : 42583260224
IFSC : SBIN0017686
MICR : 282002047
Branch : KHANDARI CROSSING AGRA

नोट: 1. संस्थान की प्रकाशन सूची संस्थान वेबसाईट www.hindisansthan.in पर उपलब्ध है।
2. सूची में से चयनित पुस्तकों का क्रयादेश ई-मेल publicationmanagerkhs@gmail.com पर भेजा जा सकता है।

Merchant Name :
THE KENDRIYA HINDI SHIKHSANA MANDAL
UPI ID : thekhsmagra@sbi

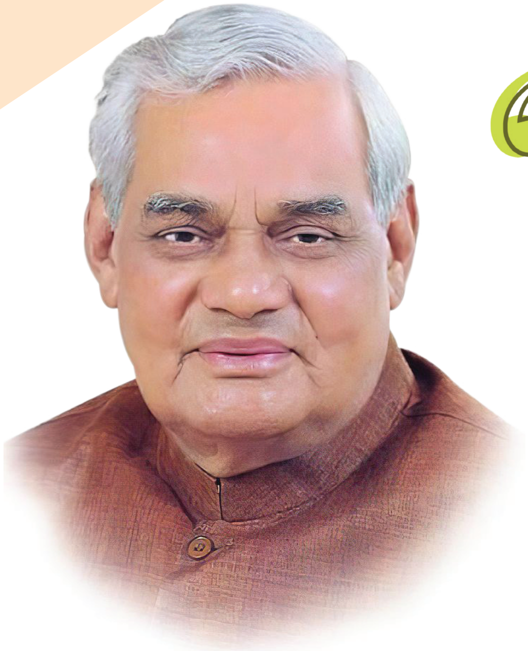

“काल के कपाल पे लिखता मिटाता हूँ............”

अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय राजनीति के ऐसे विशिष्ट व्यक्तित्व थे जिन्होंने विचार, वाणी और आचरण-तीनों के माध्यम से राष्ट्र को दिशा प्रदान की। वे केवल एक राजनेता नहीं बल्कि संवेदनशील कवि, दूरदर्शी चिंतक और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध राष्ट्रनेता थे। स्वतंत्र भारत के इतिहास में उनका स्थान इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्होंने वैचारिक दृढ़ता के साथ संवाद, सहिष्णुता और समन्वय को राजनीति का आधार बनाया।

अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म 25 दिसंबर 1924 को मध्य प्रदेश के ग्वालियर नगर में हुआ। उनके पिता पंडित कृष्ण बिहारी वाजपेयी और माता कृष्णा देवी थीं। पारिवारिक वातावरण में राष्ट्रभक्ति, साहित्य और नैतिक मूल्यों का समावेश था जिसने बालक अटल के व्यक्तित्व को प्रारंभ से ही गंभीर, संवेदनशील और विचारशील बना दिया।

अटल बिहारी वाजपेयी की प्रारंभिक शिक्षा ग्वालियर में हुई। आगे की उच्च शिक्षा के लिए वे कानपुर गए, जहाँ उन्होंने विक्टोरिया कॉलेज से स्नातक की पढ़ाई की तथा डी.ए.वी. कॉलेज से राजनीति शास्त्र में परास्नातक उपाधि प्राप्त की। छात्र-जीवन के दौरान वे वाद-विवाद प्रतियोगिताओं और साहित्यिक गतिविधियों में सक्रिय रहे।

किशोरावस्था में ही अटल बिहारी वाजपेयी का संपर्क राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से हुआ। संघ के अनुशासन, राष्ट्रनिष्ठा और सामाजिक सेवा की भावना ने उनके जीवन को गहराई से प्रभावित किया। वे नियमित रूप से शाखाओं में जाते थे और संगठनात्मक जीवन के संस्कार उन्होंने वहीं से ग्रहण किए। संघ ने उन्हें भारतीय संस्कृति, राष्ट्रवाद और एकात्म मानववाद की वैचारिक पृष्ठभूमि प्रदान की जो आगे चलकर उनकी राजनीतिक दृष्टि का मूल आधार बनी।

राजनीति में पूर्णकालिक रूप से सक्रिय होने से पूर्व अटल बिहारी वाजपेयी ने पत्रकारिता के क्षेत्र में भी कार्य किया। वे ‘पाञ्चजन्य’, ‘स्वदेश’ और ‘वीर अर्जुन’ जैसे प्रतिष्ठित पत्रों से जुड़े रहे। पत्रकारिता के माध्यम से उन्हें समाज की जमीनी समस्याओं को समझने, जनभावनाओं से जुड़ने और भाषा की शक्ति को पहचानने का अवसर मिला।

वर्ष 1951 में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नेतृत्व में भारतीय जनसंघ की स्थापना हुई जिसमें अटल बिहारी वाजपेयी की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

अटल बिहारी वाजपेयी अनेक बार लोकसभा और राज्यसभा के सदस्य रहे। संसदीय जीवन में उन्होंने लोकतांत्रिक मर्यादाओं का सदैव पालन किया। वर्ष 1977 में जनता पार्टी सरकार के गठन के बाद उन्हें विदेश मंत्री बनाया गया। विदेश मंत्री के रूप में उन्होंने भारत की गुटनिरपेक्ष नीति को प्रभावी ढंग से विश्व मंच पर प्रस्तुत किया। संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी भाषा में भाषण देकर उन्होंने न केवल हिंदी को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई बल्कि भारत की सांस्कृतिक अस्मिता को भी सशक्त रूप में प्रस्तुत किया।

वर्ष 1980 में भारतीय जनता पार्टी की स्थापना हुई और अटल बिहारी वाजपेयी इसके पहले राष्ट्रीय अध्यक्ष बने। प्रारंभिक दौर में पार्टी को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा किंतु अटल जी के नेतृत्व में पार्टी ने वैचारिक स्पष्टता और संगठनात्मक विस्तार प्राप्त किया। 1990 के दशक में वे लोकसभा में प्रतिपक्ष नेता रहे। इस भूमिका में उन्होंने सरकार की आलोचना करते हुए भी सदैव रचनात्मक और मर्यादित भाषा का प्रयोग किया, जिससे संसदीय परंपराएँ और अधिक सुदृढ़ हुईं। अटल बिहारी वाजपेयी तीन बार भारत के प्रधानमंत्री बने। पहली बार 1996 में वे केवल 13 दिनों के लिए प्रधानमंत्री रहे किंतु इस अल्पकालिक कार्यकाल में भी उन्होंने संसद में अपने भाषण से लोकतंत्र के प्रति अपनी आस्था स्पष्ट कर दी। दूसरी बार 1998 में उन्होंने प्रधानमंत्री पद संभाला और तीसरी बार 1999 से 2004 तक उन्होंने पूर्ण कार्यकाल वाली सरकार का नेतृत्व किया। यह कालखंड भारतीय राजनीति और विकास के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।प्रधानमंत्री के रूप में अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों में 1998 के पोखरण परमाणु परीक्षण शामिल हैं।

उनके कार्यकाल में आर्थिक सुधारों को मानवीय दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ाया गया। स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, दूरसंचार और आईटी क्षेत्र में विस्तार जैसे कदमों ने भारत के बुनियादी ढांचे को नई गति दी। उन्होंने विकास को केवल आर्थिक आंकड़ों तक सीमित न रखकर उसे आम नागरिक के जीवन से जोड़ने का प्रयास किया। राजनीति के साथ-साथ अटल बिहारी वाजपेयी का रचनाकार व्यक्तित्व भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनकी रचनाएँ उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को उजागर करती हैं। उनकी प्रमुख कृतियों में ‘रग-रग हिन्दू मेरा परिचय’, ‘मृत्यु या हत्या’, ‘अमर बलिदान’ (लोकसभा में दिए गए उनके महत्वपूर्ण वक्तव्यों का संग्रह), ‘कैदी कविराय की कुण्डलियाँ’, ‘संसद में तीन दशक’, ‘अमर आग है’, ‘कुछ लेखः कुछ भाषण’, ‘सेक्युलर वाद’, ‘राजनीति की रपटीली राहें’, ‘बिन्दु-बिन्दु विचार’ तथा काव्य-संग्रह ‘मेरी इक्यावन कविताएँ’ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, जिनमें उनकी राष्ट्रवादी चेतना, लोकतांत्रिक सोच, वैचारिक स्पष्टता और संवेदनशील काव्यात्मक अभिव्यक्ति एक साथ देखने को मिलती है।

अटल बिहारी वाजपेयी की काव्य-चेतना मूलतः मानवीय संवेदना, राष्ट्रबोध और जीवन-दर्शन के त्रिवेणी-संगम से निर्मित है। उनकी कविता में व्यक्ति और राष्ट्र, वर्तमान और भविष्य, पीड़ा और आशा आदि सभी का संतुलित समन्वय दिखाई देता है। वे कविता को केवल भावात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं मानते थे, बल्कि उसे सामाजिक और नैतिक चेतना से जोड़ते थे। इसलिए उनकी काव्य दृष्टि में राष्ट्रप्रेम मुखर रूप में उपस्थित है, किंतु वह संकीर्ण या उग्र न होकर प्रेरणार्थक सिद्ध होती हैं, यथा - “हार नहीं मानूँगा, रार नहीं ठानूँगा” और “भरी दुपहरी में अँधियारा, सूरज परछाई से हरा, अंतरतम का नेह निचोड़े, बुझी हुई बाती सुलगाएँ, आओ फिर से दिया जलाएँ” पीठ में छुरी सा चाँद, राहु गया रेख फाँद, मुक्ति के क्षणों में बार बार बंध जाता हूँ,गीत नहीं गाता हूँ आदि।

उनकी काव्य-चेतना में आशावाद और जीवन के प्रति आस्था विशेष रूप से दृष्टिगोचर होती है। निराशा और संकट के क्षणों में भी वे हार नहीं मानते, बल्कि संघर्ष और पुनर्निर्माण का संदेश देते हैं। उनकी कविताएँ संकल्प, साहस और आत्मविश्वास की प्रेरणा देती हैं। इसी कारण उनकी कविता केवल यथार्थ का चित्रण नहीं करती, बल्कि भविष्य के प्रति विश्वास भी जगाती है।

अटल बिहारी वाजपेयी को अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मानों से सम्मानित किया गया। वर्ष 2015 में उन्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान ‘भारत रत्न’ से अलंकृत किया गया। । 25 दिसंबर भारतीय राजनीति और लोकतंत्र के इतिहास में एक विशेष दिन के रूप में अंकित है। यह दिन न केवल भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती के रूप में मनाया जाता है, बल्कि सुशासन दिवस के रूप में भी राष्ट्र को प्रशासनिक ईमानदारी, पारदर्शिता और जनकल्याण की याद दिलाता है।

16 अगस्त 2018 को उनका निधन हो गया। उनका निधन केवल एक नेता का नहीं, बल्कि भारतीय राजनीति के एक युग का अंत था। अटल जी का जीवन, व्यक्तित्व और राजनीतिक दर्शन सुशासन की जीवंत परिभाषा प्रस्तुत करता है।

संरक्षक
प्रो. सुरेन्द्र दुबे

प्रधान संपादक
प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी

संपादक
डॉ. अपर्णा सारस्वत

संपादन सहायक
शिवानी चौहान

टाइप सेटिंग
योगेन्द्र सिंह राणा

मुद्रक : एजुकेशनल स्टोर्स, गाजियाबाद (उ.प्र.)

संस्थान समाचार में प्रकाशित समाचारों का स्रोत केंद्रीय हिंदी संस्थान के विभिन्न विभागों/केंद्रों से प्राप्त सामग्री है। संस्थान समाचार के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया और सुझाव संपादक के पास भेज सकते हैं। संस्थान समाचार का ई-मेलः sansthansamacharkhs2021@gmail.com

सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल आगरा-282005 द्वारा वितरण हेतु दिल्ली केंद्र से प्रकाशित।